शोध मंथन Vol. XVI No.2 Apr.- June. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.36

''अटल बिहारी वाजपेयी एवं भारतीय राजनीतिः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन''

प्राप्तिः 05.04.2025
स्वीकृतः 20.05.2025

36

डॉ. हितेन्द्र यादव
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
लाजपत राय कॉलेज,
साहिबाबाद, गाजियाबाद
ईमेलः dr.hitendra2011@gmail.com

सारांश

एक बहुमुखी व्यक्तित्व के स्वामी एवं भारतीय जीवन जीने वाले राजनीतिज्ञ अटल बिहारी वाजपेयी 'तल्ख' होते थे तो 'कबीर' लगते थे जब 'राष्ट्रमय' हो जाते थे। तो 'तुलसीदास' होते थे। उनका कद जन–जन तक पहुंचता था और भारतीय जनता पार्टी को पीछे छोड़ देता थे। वह भारतीय जनमानस से जुड़ जाते थे। इसलिए पार्टी छोटी पड़ जाती थी। यदि गंभीरता से सोचा जाए तो अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने जीवन की आधी शताब्दी भारतीय राजनीति को समर्पित कर दी थी। राजनीति में लोग वाजपेयी से व्यक्तिगत रूप से प्रभावित थे। वे सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों की राजनीति के सामंजस्य और जिम्मेदारियों से पूरी तरह वाकिफ थे। वे गिरते सामाजिक मूल्यों को लेकर उतने ही चिंतित थे, जितने एक परिवार के मुखिया होते हैं। वे राजनीति के शिखर पुरुष थे। यह अटल जी के व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि जयललिता और ममता बनर्जी एक ही मंच पर थीं। जॉर्ज फर्नांडिस और राम जेठमलानी एक ही मंत्रिमंडल में थे। उमा भारती और मेनका गांधी एक साथ थे। वे भारतीय राजनीति में विपक्ष और सत्ता पक्ष की भूमिका निभाती रही थी। उन्हें भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। अयोध्या मामले में उनकी बदली विचारधारा भारतीय संस्कृति के अनुरूप थी, क्योंकि भारतीय चिंतन परंपरा और धार्मिक सांस्कृतिक सहिष्णुता की उदार हिंदू परंपरा का शायद यही सबसे अच्छा तत्व है और यह घृणा और शत्रुता पर नहीं बल्कि प्रेम, सहयोग और स्वीकृति पर आधारित है। वैश्वीकरण को समय की मांग मानते हुए वे राष्ट्रहित में उदार नीति अपनाते हुऐ, कुशल राजनीतिज्ञ का यह गुण उन्हें विश्व के सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञों की श्रेणी में लाता है और भारतीय राजनीति में उनकी सफलता की पहचान साबित होती है।

मुख्य बिंदु

राजनीतिक, व्यक्तित्व, लोकतंत्र, मतदान, राजनीतिक सोच आदि।

परिचय

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व हिमालय के समान सीधा, सागर के समान गंभीर और गंगा के समान पवित्र था। अटल जी के व्यक्तित्व में एक अनूठा आकर्षण था। उनके विरोधी भी

उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अंततः उनके अपने हो जाते थे। उन्होंने अपने जीवन की विनम्रता, साहस और सहिष्णुता को मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने मानवीय पीड़ाओं को अनुभव किया था, इसीलिए वे मानवता के सच्चे सेवक और उपासक थे और दिन–रात लोगों की पीड़ा सुनने और उनके दुखों को कम करने में लगे रहते थे। इसके अनेक उदाहरण हैं। नवप्रवर्तक अटल जी का मार्ग उनका अपना, व्यक्तिगत है। अटल जी ने मानव विकास की विरोधी शक्तियों को परास्त किया था। आप उनमें दिखावटीपन नहीं, वास्तविकता पाएंगे। उनकी नई विचारधारा हर किसी को प्रभावित करती थी। आप उन्हें कभी कल्पना और भावनाओं के बल पर बहते हुए नहीं पाएंगे। वे अडिग और वास्तविकता की नींव पर खड़े हुए मिलेंगे। वे जो कुछ भी देखते थे, सहज अवस्था में देखते थे। यही कारण है कि दूसरों के कष्टों को देखकर 'स्व' के कष्टों से जूझते उस भागवत पुरुष की आंखों में भी आपको आंसू दिखाई देंगे। अटल जी के पास भारतीय और सार्वभौमिक जीवन दृष्टि थी, यह इतनी प्रखर थी कि जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं था। दूरदर्शिता उनकी निजी संपत्ति थी। उन्होंने नए युग का निर्माण किया है। वे युगपुरुष और युगप्रवर्तक भी थे। आप अटल जी से किसी भी विषय पर बात कर सकते थे। सर्वव्यापी अटल जी किसी वर्ग विशेष के नहीं थे, बल्कि वे पूरे राष्ट्र की निधि थे। आप उनके मुख से पूरे समाज और राष्ट्र की आवाज सुनते थे। यही कारण है कि हर कोई उनकी आवाज को मुग्ध होकर सुनता था। वे शब्दों और कर्मों के जादूगर थे।

अटल जी चाहते थे कि भारत एक ऐसे वृक्ष की तरह विकसित हो जो अपनी जड़ों के माध्यम से लोगों के जीवन का उपभोग करते हुए स्वस्थ रहे और कोई आंधी या तूफान उसे हिला नहीं सकें। इसी प्रकार भारतीय चिंतन पद्धति अपनी सरस्वती संस्कृति के वृक्ष की जड़ों की तरह अपनी धमनियों को सींचती है और पतझड़ के रूप में सामाजिक बुराइयों और कुंठाओं को त्याग कर नए मूल्यों का आविष्कार करती है। अटल जी का चिंतन सदैव गतिशील, शाष्वत और हर पल प्रवाहमान था और उनका प्रेरक नवबोधवाद एक संपूर्ण चेतना का सार था। उन्होंने अलगाववाद और सांप्रदायिकता के गढ़ में राष्ट्रीयता के बीज बोने और बुराइयों की निंदा करते हुए शांतिदूत की भूमिका निभाने के सर्वोत्तम गुणों को अपने जीवन में उतारा। अटल जी एक आम आदमी की तरह सरल और सीधे थे लेकिन दिल और दिमाग से बहुत प्रभावशाली थे। वे असाधारण बौद्धिक प्रतिभा, दृढ़ मनोबल, कार्यकुशलता, कृतज्ञ स्वभाव और निर्भीकता जैसे अनेक गुणों से ओतप्रोत एक महान व्यक्ति थे।

जन्म एवं परिवार

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के शिदे की छावनी में हुआ था। श्री वाजपेयी के पिता पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी संस्कृत के जाने–माने विद्वान थे। उनके चार पुत्र अवध बिहारी, सदा बिहारी वाजपेयी, प्रेम बिहारी वाजपेयी और अटल बिहारी वाजपेयी तथा तीन पुत्रियाँ विमला वाजपेयी, कमला वाजपेयी और उर्मिला वाजपेयी थीं।

शैक्षणिक परिचय अटल जी की बी.ए. तक की शिक्षा ग्वालियर में हुई। उन्होंने विक्टोरिया कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा सर्वोच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की। वे विक्टोरिया कॉलेज के छात्र संघ के मंत्री और उपाध्यक्ष भी रहे। उन दिनों छात्र संघ का अध्यक्ष किसी प्रोफेसर को बनाया जाता था। वे हमेशा वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.36

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की वाद–विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए उन्हें विक्टोरिया कॉलेज से भेजा गया था। लंबी यात्रा में देरी हो गई। जब वे मुइर हॉल पहुंचे तो प्रतियोगिता समाप्त हो चुकी थी। निर्णायक मंडल अपना निर्णय तैयार करने में व्यस्त था। सभी निर्णय की घोषणा का इंतजार कर रहे थे। तभी धूल से लथपथ अटल जी मंच पर चढ़े और ''सभापति महोदय'' कहकर क्षमा मांगते हुए अपना भाषण शुरू किया। भाषण में ऐसा सम्मोहन था कि सभी श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। निर्णायक मंडल भी स्तब्ध होकर भाषण सुनने लगा। हर दो मिनट पर तालियों से अटल जी का स्वागत किया जाने लगा। परिणाम यह हुआ कि उन्हें प्रथम पुरस्कार दिया गया। निर्णायक मंडल के सदस्य महान कवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन थे।

ग्वालियर से अटल जी उत्तर प्रदेश की व्यापारिक नगरी कानपुर के प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र डीएवी कॉलेज में आए। उन्होंने राजनीति विज्ञान में एमए की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्होंने एलएलबी की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और संघ के लिए काम करना शुरू कर दिया।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में प्रवेश

पंडित श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रेरणा से अटल जी ने एलएलबी की पढ़ाई छोड़ दी और संघ के पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में दिन–रात काम करना शुरू कर दिया। राष्ट्र और समाज के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले अटल जी ने अविवाहित रहकर सेवा का कर्तव्य स्वीकार किया। पंडित श्यामा प्रसाद मुखजी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के निकट संपर्क में रहकर अटल जी ने उनके मार्गदर्शन में सकारात्मक राजनीति सीखी।

भारतीय राजनीति में प्रवेश

1955 में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने लोकसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। वे लखनऊ से सांसद थीं। चुनाव की तिथि घोषित हुई और अटल जी जनसंघ के उम्मीदवार के रूप में चुनाव मैदान में कूद पड़े लेकिन समर्थन के अभाव में वे जीत नहीं सके। इससे उनका उत्साह कम नहीं हुआ, बल्कि उनका मनोबल और बढ़ गया क्योंकि उनके चुनावी भाषणों में श्रोताओं, विशेषकर युवाओं की भारी भीड़ होती थी।

केन्द्रीय राजनीति में योगदान

1957 में दूसरा आम चुनाव हुआ। अटल जी बलरामपुर (जिला गोंडा, उ.प्र.) से संसद के लिए जनसंघ के उम्मीदवार थे। इस चुनाव में हिंदू मतदाताओं के साथ–साथ मुस्लिम मतदाताओं ने भी उन्हें वोट दिया। उनकी रैलियों में उमड़ी भीड़ को देखकर विपक्षी दल तिलमिला उठे थे। विरोधी दलों के एक या दूसरे राष्ट्रीय नेता अटल जी को हराने के लिए वहां चुनावी रैलियां करते रहे, लेकिन जीत हमेशा अटल जी की ही हुई। अपनी जीत पर अटल जी ने भारी भीड़ की सभा में कहा था– ''यह जीत मेरी नहीं, बलरामपुर क्षेत्र के सभी नागरिकों की है। आपने मुझे जो प्यार और स्नेह दिया है, मैं वादा करता हूं कि सांसद के रूप में एक देशभक्त सेवक के रूप में इस क्षेत्र की सेवा करूंगा।'' संसदीय दल के नेता 1957 से 1977 तक अटल जी जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे।

संसदीय दल के नेता

आपातकाल के बाद सर्वोदय नेता जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 'जनता पार्टी' का गठन हुआ। कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टियों को छोड़कर बाकी सभी पार्टियों ने जनता पार्टी के टिकट पर

चुनाव लड़ा। अस्वस्थ होने के बावजूद अटल जी दिल्ली से भारी बहुमत से विजयी हुए। जनता पार्टी की सरकार बनी और अटल जी को विदेश मंत्री बनाया गया।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष

6 अप्रैल 1980 अटल जी के जीवन का बहुत महत्वपूर्ण दिन था। इस दिन बम्बई में भारतीय जनता पार्टी का जन्म हुआ और अटल जी इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये गये। इस अधिवेशन में उनका जो भव्य स्वागत हुआ, वह ऐतिहासिक था। जुलूस में शामिल देश के कोने–कोने से पच्चीस हजार से अधिक लोगों ने अपने नेता को अभूतपूर्व सम्मान दिया। इस अवसर पर उन्होंने जो व्याख्यान दिया, उसने देश की राजनीति को एक नई दिशा दी। संसद की गरिमा और व्यवस्था को बनाए रखने में उनका योगदान उल्लेखनीय है। चाहे विदेश मंत्री के रूप में हो या सदन में विपक्ष के नेता के रूप में या संसद सदस्य के रूप में। उनके शब्दों में हमेशा राष्ट्रवाद के प्रति उनकी पूर्ण प्रतिबद्धता झलकती थी। उनके लिए राजनीति, राजनीतिक दल और सार्वजनिक पद स्वार्थ का साधन नहीं बल्कि आम लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने का साधन हैं। वे कई संसदीय समितियों के अध्यक्ष थे। उनके खुले विचारों के कारण पूरा राष्ट्र ही उनका परिवार था। उनके मिलनसार और मधुर व्यवहार के कारण सभी राष्ट्रीय नेता उनका सम्मान करते थे।

जनसंघ की संगठनात्मक रूपरेखाः

पार्टी ने उत्तर प्रदेश के तीसरे लोकसभा क्षेत्र फारूखाबाद में डॉ. राम मनोहर लोहिया का समर्थन किया और उन्हें विजयी बनाया। लोहिया की जीत पर अखबारों में छपा कि समाजवादियों की जीत हुई है, लेकिन उनके नेता जनसंघ के प्रभाव में आ गए थे। चौथा चुनाव गुजरात के राजकोट में हुआ, जहाँ स्वतंत्र पार्टी के महासचिव मीनू मसानी ने सौराष्ट्र के राजकुमारों और राजकोट शहर के जनसंघ कार्यकर्ताओं के समर्थन से जीत हासिल की। इसके बाद 1967 में हुए विधानसभा चुनाव में भी जनसंघ ने जीत हासिल की।

चुनाव प्रचार के दौरान 14 मई 1963 को जनसंघ के अध्यक्ष डॉ. रघुवीर फारूखाबाद से जौनपुर जा रहे थे, जिसमें डॉ. रघुवीर दुर्घटना के शिकार हो गए और घायल हो गए तथा बाद में उनकी मृत्यु हो गई। यह जनसंघ के लिए दूसरी दुर्घटना थी। रूढ़िवादी हिंदू विचारक होने के बावजूद डॉ. रघुवीर ने राजगोपालाचारी से बात करके सांप्रदायिक कलंक को निरर्थक साबित करने में मदद की थी। उनकी दुखद मृत्यु न केवल पार्टी के लिए घातक साबित हुई, बल्कि पारंपरिक सोच वाले दलों की एकता को भी गहरा झटका लगा।

भरतीय जनता पाटी

देश में एक पूर्ण राष्ट्रीय पार्टी का उदय – हर्ष और उल्लास के माहौल में मई 1977 को जनता पार्टी का औपचारिक रूप से जन्म हुआ। भारतीय जनसंघ, संगठन कांग्रेस, भारतीय लोकदल और समाजवादी पार्टी के पूर्व अध्यक्षों ने अपनी–अपनी पार्टियों के नई पार्टी में विलय की घोषणा की और प्रतिनिधियों के एक बड़े समूह ने सर्वसम्मति से पार्टी की स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार किया। प्रगति मैदान (राष्ट्रों का हॉल) का भव्य हॉल, जहां मई 1997 की सुबह नई पार्टी का स्थापना सम्मेलन आयोजित किया गया था, लगभग ढाई घंटे तक जयकारों और तालियों से गूंजता रहा। चारों दलों

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.36

के अध्यक्षों ने अपने–अपने तरीके से संक्षेप में घोषणा की कि उनकी पार्टियों ने अपना अस्तित्व समाप्त करने और जन आकांक्षाओं के नए क्रांतिकारी प्रतीक जनता पार्टी में विलय करने का निर्णय लिया था। पार्टी के महासचिव नानाजी देशमुख ने सम्मेलन का आयोजन किया और नई पार्टी को ''पांच धाराओं'' का पवित्र संगम बताया।

सुरक्षा नीति – पार्टी अपने नागरिकों तथा देश की सुरक्षा को सर्वोच्च महत्व देती है। पार्टी ने सुरक्षा बलों को अत्याधुनिक उपकरणों से लैस करने तथा राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की स्थापना करने का वादा किया। पार्टी ने कहा कि वह परमाणु नीति का पुनर्मूल्यांकन करेगी। और सेना को परमाणु हथियार उपलब्ध कराएंगे।

आर्थिक विजय – घोषणापत्र में कहा गया था कि सरकार मुक्त बाजार नीतियों को प्रोत्साहित करेगी, लेकिन इसके वैश्वीकरण की अनुमति नहीं देगी, क्योंकि यह देश के हितों के खिलाफ होगा। पार्टी विदेशी पूंजी निवेश का स्वागत करेगी, लेकिन उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में इसे प्रोत्साहित नहीं करेगी। पार्टी इसे केवल बुनियादी सेवाओं, उच्च प्रौद्योगिकी और अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में प्रोत्साहित करेगी। उन विदेशी निवेशकों को वरीयता दी जाएगी जो घरेलू निवेशकों के साथ साझेदारी करेंगे। सार्वजनिक क्षेत्र में केवल उन्हीं विषयों को शामिल किया जाएगा जो राष्ट्र की सुरक्षा से संबंधित हैं। पार्टी यह भी सुनिश्चित करेगी कि रिजर्व बैंक स्वायत्त रूप से काम कर सके। पार्टी ने वर्तमान कर ढांचे को तर्कसंगत और सरल बनाने तथा आयकर छूट सीमा को बढ़ाकर 60,000 रुपये करने का भी वादा किया था। पार्टी ने कहा था कि वह छोटे उद्योगों को पूरा प्रोत्साहन देगी और यह सुनिश्चित करेगी कि बड़े उद्योग उन्हें नुकसान न पहुंचा सकें। पार्टी ने भ्रष्टाचार और काले धन के खिलाफ लड़ाई को दृढ़ता के साथ जारी रखने का भी संकल्प लिया था।

चुनाव सुधार – पार्टी का मानना था कि चुनावों में काले धन का इस्तेमाल भ्रश्टाचार का मूल कारण था। सत्ता में आने के बाद वह दोशपूर्ण चुनाव प्रणाली को बदलने के लिए व्यापक चुनाव सुधार करेगी। इनमें सरकारी खर्च पर चुनाव लड़ना और गोस्वामी समिति की सिफारिषों को लागू करना षामिल था।

भ्रष्टाचार की रोकथाम – प्रधानमंत्री सहित उच्च पदों पर बैठे सभी व्यक्तियों के खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच के लिए लोकपाल की स्थापना की जाएगी। राजनीतिक उद्देश्यों के लिए सीबीआई जैसी खुफिया एजेंसियों के इस्तेमाल पर तत्काल रोक लगाई जाएगी। इसके साथ ही सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए अपनी संपत्ति घोषित करना अनिवार्य किया जाएगा।

कृषि नीति – घोषणापत्र में आरोप लगाया गया था कि कांग्रेस के शासन में कृषि क्षेत्र की पूरी तरह उपेक्षा की गई थी।

जनसंख्या नीति – बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए पार्टी ने अपनी जनसंख्या नीति में स्पष्ट रूप से कहा था कि वह एक बार फिर राष्ट्रीय एजेंडे में परिवार नियोजन को पर्याप्त महत्व देगी। पार्टी एक ऐसा कानून बनाएगी जिसके तहत दो से अधिक बच्चे होने पर किसी भी निर्वाचित पद के लिए खड़े होने के अधिकार से वंचित हो जाएगा।

अल्पसंख्यकों के प्रति नीति – भाजपा ने कहा था कि वह अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करेगी लेकिन वह तुष्टीकरण की नीति को जारी रखने के पक्ष में नहीं थी क्योंकि यह उन्हें राष्ट्र

की मुख्यधारा से जोड़ने में एक बड़ी बाधा थी। पार्टी अल्पसंख्यकों की शिक्षा और व्यावहारिक प्रशिक्षण पर जोर देने और मस्जिदों के प्रबंधन के लिए तिरुपति मंदिर ट्रस्ट जैसा ट्रस्ट बनाएगी।

अटल जी का पहला प्यार राजनीति थी। पत्रकारिता उनका काम था और कविता उनका शौक। उन्होंने एक दर्जन किताबें लिखी थी और पार्टी के प्रकाशनों 'राष्ट्रधर्म', 'पांचजन्य' और 'वीर अर्जुन' का संपादन किया था। वे 1947–1952 तक पत्रकारिता से जुड़े रहे। उन्होंने 1946–50 में लखनऊ से दैनिक 'स्वदेश' का प्रकाशन शुरू किया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 1951 में जनसंघ की स्थापना की। अटल जी जनसंघ के संस्थापकों में से एक थे। 1979 में जब जनता पार्टी बनी तो वे उसके साथ चले गए। 1977–79 तक वे भारत के विदेश मंत्री रहे। यह भारत में पहली गैर–कांग्रेसी केंद्रीय सरकार थी। 1980 में भारतीय जनता पार्टी का गठन हुआ। वे लगातार 6 वर्षों तक भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष रहे। उन्होंने संसद में चार दशकों तक देश की सेवा की है। 1982 में उन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया। 1983 में कानपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें मानद 'डॉक्टरेट' की उपाधि दी। 1984 में उन्हें देश के सर्वश्रेष्ठ सांसद का पुरस्कार दिया गया। अटल जी 1988 से भारत के प्रधानमंत्री पद पर आसीन थे।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर वाजपेयी ने कहा था कि पत्रकारिता पहले एक मिशन थी, फिर यह एक पेशा बन गई और अब यह एक व्यवसाय बनती जा रही थी। लेकिन अगर पत्रकार बिना किसी हिचकिचाहट और तटस्थता के संजय की भूमिका निभाएं, तो वे धृतराष्ट्र जैसे अंधे राजा को भी वास्तविकता से अवगत करा सकते थे। आज के मीडिया और पत्रकारों को चापलूसी की नहीं, बल्कि ईमानदारी और स्पष्टता की जरूरत है। उन्हें समाज की आंख और कान बनना होगा।

राजनीति में लोग वाजपेयी से व्यक्तिगत रूप से प्रभावित थे। कई बुद्धिजीवी ऐसा मानते थे और अटल बिहारी वाजपेयी के बारे में उनकी एक राय भी थीः ''मुझे उनकी पार्टी, उनकी विचारधारा से नफरत है, लेकिन आप इस आदमी से प्यार करेंगे।'' एक तरह से देखा जाए तो अटल जी भारतीय राजनीति में जवाहर लाल नेहरू के बाद सबसे लोकप्रिय व्यक्तित्व हैं। यही कारण है कि अटल बिहारी वाजपेयी बीसवीं सदी के अंतिम वर्षों और इक्कीसवीं सदी के आरंभ में सत्ता पक्ष और विपक्ष की राजनीति के केंद्र बिंदु रहे थे।

वे सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों की राजनीति के सामंजस्य और दायित्वों से पूरी तरह परिचित थे। गिरते सामाजिक मूल्यों को लेकर वे उतने ही चिंतित थे, जितना एक परिवार का मुखिया। वे राजनीति में शिखर पुरुष थे। वे कहते थे कि दुर्भाग्य से आज राजनीति में आदर्शवाद के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है। इसने सत्ता के लिए गंदे संघर्ष का रूप ले लिया है और यही आज की सच्चाई है। वाजपेयी जी एक सफल विश्लेषक और कूटनीतिज्ञ प्रतीत होते थे। वे मोरारजी देसाई के मंत्रिमंडल में विदेश मंत्री थे। उनके अच्छे गुणों पर टिप्पणी करते हुए पूर्व विदेश मंत्री और प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव कहते थे, संसद में अटल जी के बौद्धिक हस्तक्षेप ने मुझे हमेशा आकर्षित किया है।

भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नया मोड़ दिया है। राजनीति को समर्पित श्री वाजपेयी जी का जीवन दर्पण की

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.36

तरह स्वच्छ और निर्मल है। उन्होंने विश्व राजनीति के मंच पर भारत की गरिमा को गौरवान्वित किया है। वे 'स्वसुधैव कुटुम्बकम' की विचारधारा पर पूरी दुनिया की राजनीति को ले जाने के लिए प्रतिबद्ध थे। वे भारतीय राजनीति के आदर्श पुरुष थे।

परिवर्तन अपने आप में कोई बुरी बात नहीं है, चाहे वह विचारों का परिवर्तन हो, जीवन का परिवर्तन हो, समाज का परिवर्तन हो या प्रकृति का, यदि उसकी दिशा प्रगतिशील और विकासपरक है तो उसे सकारात्मक माना जाता है। दूसरों के अच्छे विचारों को स्वीकार करना और उनकी सराहना करना बहुत साहस का काम है। जबकि असहिष्णु, जिद्दी और मूर्ख व्यक्ति जीवन भर अपनी आधी–अधूरी मान्यताओं का कैदी बना रहता है। जिससे उसका मानसिक विकास सदैव बाधित रहता है। इसीलिए वाजपेयी जी ने जो आरंभ में कहा, आज समय की मांग के अनुसार उनमें लचीलापन आया है, यह विचार बहुसंख्यक भारतीय समाज के लिए उपयुक्त और उपयोगी है। अयोध्या मामले में उनकी बदली विचारधारा भारतीय संस्कृति के अनुरूप थी। क्योंकि यह शायद भारतीय चिंतन परंपरा और धार्मिक सांस्कृतिक सहिष्णुता की उदार हिंदू परंपरा का सबसे अच्छा तत्व था और यह घृणा और शत्रुता पर आधारित नहीं बल्कि प्रेम, सहयोग और स्वीकृति पर आधारित था। सहिष्णुता, हालांकि, किसी को सहन करने की बू आती थी। 'स्वीकृति' अधिक सकारात्मक और व्यापक शब्द है। जिसमें उदारता और सहिष्णुता के तत्व अधिक प्रबल हैं।

निष्कर्ष

उदार हिंदू धर्म की खूबसूरती यह है कि इसके भीतर इतनी धाराएं और उपधाराएं हैं और लंबे समय तक उन्हें बनाए रखने का ऐसा आंतरिक अभ्यास है कि इसे विभिन्न संस्कृतियों के समूहों के साथ सहजता से रहने में कोई कठिनाई नहीं हुई। यह इंद्रधनुषी परंपरा वास्तव में भारतीय समाज की जीवंत परंपरा है जिसका पालन करने और आगे बढ़ाने का वादा वाजपेयी जी कर रहे थे। क्योंकि वर्तमान भारतीय समाज की हिंसक, विध्वंसकारी और घृणा फैलाने वाली शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हुए एक कट्टर प्रधानमंत्री किस हद तक जा सकता है, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती थी। जबकि एक उदार और सम्माननीय प्रधानमंत्री भी ऐसे किसी कार्य को प्रोत्साहित नहीं कर सकता जिससे सामाजिक सद्भाव बिगड़े और राष्ट्रीय अखंडता खंडित हो। वाजपेयी जी ने भी वर्तमान प्रधानमंत्री के पद से ऐसा ही उदार विचार व्यक्त किया था। इसकी आलोचना और स्वागत किया जाना चाहिए क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में यह देश, समाज और राजनीति के व्यापक हितों के लिए अच्छा था। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भाजपा केवल सत्ता के लिए ही नहीं बल्कि अपने व्यक्तिगत प्रभाव के कारण भी बहुत लचीली और व्यावहारिक हो गई थी। जब अटल जी भारत से लाहौर तक बस से यात्रा करते थे, तो उनके विचार खुले रहते थे। कश्मीर पर जब बात होती थे तो राजनीतिक पाखंड उनके आड़े नहीं आता, वहां उनकी दृढ़ता मुशर्रफ को अधूरी वार्ता छोड़कर भागने पर मजबूर कर दिया था। कारगिल के मामले में देशभक्ति का परिचय दिया था। एक ओर वे अमेरिका से हाथ मिलाते थे तो दूसरी ओर रूस और चीन जैसे अपने पड़ोसियों से रिश्ते मजबूत करते थे। वैश्वीकरण को समय की मांग मानते हुए वे राष्ट्रहित में उदार नीतियां का अपनाया। एक कुशल राजनीतिज्ञ का यह गुण उन्हें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञों की श्रेणी में लाता है और भारतीय राजनीति में उनकी सफलता की पहचान साबित होती है।

सदंर्भ

1. अटल बिहारी वाजपेयी– बिंदुवार विचार, प्रकाशन– किताबघर, नई दिल्ली, 1992, पृ० सं०– 247–248
2. अटल बिहारी वाजपेयी– संसद में तीन दशक, खंड–1, प्रकाशन– प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृ० सं०–4
3. अटल बिहारी वाजपेयी– राजनीति की रपटीली राहें, प्रकाशन– प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृ० सं०–14
4. जनसत्ता दैनिक समाचार पत्र, 25 दिसंबर, 1998।
5. वार्षिक पंचांग, ठाकुरप्रसाद बुकसेलर, वाराणसी 2008।
6. बी.आर. शर्मा– ''पंजाब में चुनाव पर रिपोर्ट – 1951–52'' पृ० सं०–16–17, 11 खन्ना बुक डिपो, जालंधर–1952
7. एस.बी. कोगेकर और आर.एल. पार्क– ''भारतीय आम चुनाव पर रिपोर्ट–1951'' पृ० सं०–156.
8. बॉम्बे पॉपुलर बुक डिपो, 1956
9. सिंह– ''कैरो गान एण्ड हरियाणा आन''– स्टेट्समैन– दिल्ली संस्करण, 15 मार्च, 1966
10. दीन दयाल उपाध्याय– ''जनसंघ और आम चुनाव, 1962, बॉम्बे एलाइड पब्लिकेशन, पृ० सं०– 2–53
11. जनदीप शोभनायक– राकेश प्रेस, दिल्ली.
12. स्मारिकाः भारतीय जनसंघ, नई दिल्ली, गुटेन्वर्ग वैक्स, नई दिल्ली.
13. भारतीय जनसंघ – सिद्धांत और नीति. दिल्ली अर्जुन प्रेस, 1965. पृ० सं०–17